MSK- 008

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम (MSK)

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिये

MSK- 008 संस्कृत साहित्यः गद्य, पद्य एवं नाटक

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी,नई दिल्ली– 110068

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिये

पाठ्यक्रमकोड : MSK-008/2024&25

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यसामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्यसामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तरपुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....

.

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....
सत्रीय कार्य कोड : .....
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययनः सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढगं से व्यवस्थित कीजिए।
2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्वनोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किकढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण सम्बन्धी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुन्दर अक्षरों में उत्तरपुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जुलाई 2024 सत्र के लिए 31 मार्च 2025

जनवरी 2025 सत्र के लिए : 30 सितंबर 2025

सत्रीय कार्य

MSK 008 संस्कृत साहित्यः गद्य, पद्य एवं नाटक

पाठ्यक्रम कोड–MSK 008

पाठ्यक्रम –संस्कृत साहित्यः गद्य, पद्य एवं नाटक

सत्रीय कार्य–MSK – 008/TMA/2024-2025

पूर्णांक– 100

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं

प्रश्नसं 1. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए – 5 × 10 = 50

(क) प्रयातुमस्माकमियंकियत्पदं धरातदम्भोधिरपिस्थलायताम्।

इतीववाहैनिजवेगदर्पितैः पयोधिरोधक्षममुद्धतंरजः ।।

(ख) अथगीतावसानेमूकीभूतवीणाप्रशान्तमधुकररुतेवकुमुदिनीसाकन्यकासमुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामापरिवृत्य स्वभावधवलयातपःप्रभावप्रगल्भया दृष्टयासमाश्वासयन्तीव , पुण्यैरिव स्पृशन्तीतीर्थजलैरिव प्रक्षालयन्ती , तपोभिरिवपावयन्ती , शुद्धिमिवकुर्वाणा , वरदानम् इवोपपादयन्तीपवित्रतामिवनयन्ती , चन्द्रापीडमाबभाषे–स्वागतमतिथये , कथमिमांभूमिमनुप्रातोमहाभागः , तदुत्तिष्ठ , आगम्यताम् , अनुभूयतामतिथिसत्कारः इति । एवमुक्तस्तुतयासम्भाषण–मात्रेणैवानुगृहीतमात्मानंमन्यमानउत्थाय भक्तया कृ तप्रणामोभगवति ! यथाज्ञापयसिइत्यभिधाय दर्शितविनयः शिष्य इवताव्रजन्तीमनुवव्राज ।

(ग) प्रत्युषसितूत्थाय तस्मिन्नेवसरसिस्नात्वा कृतनिश्चया , तत्प्रीत्यातमेवकमण्डलुमादाय तान्येव च वल्कलानितामेवाक्षमालांगृहीत्वा , बुद्धवा निःसारतांसंसारस्य , ज्ञात्वा च मन्दपुण्यतामात्मनः , निरूप्य चाप्रतीकारदारुणतांव्यसनोपनिपातानाम् , आकलय्य दुर्निवारतां शोकस्य , दृष्ट्वा च निष्ठुरतांदेवस्य ,

चिन्तयित्वाचातिबहुलदुःखतां स्नेहस्य ,भावयित्वाचानित्यतांसर्वभावानाम् , अवधार्य चाकाण्डभङ्गुरतां सर्वसुखानाम् , अविगणय्य तातमम्बां च , परित्यज्य सहपरिजनेनसकलबन्धुवर्गम् , निवर्त्यविषयसुखेभ्योमनः , संयम्येन्द्रियाणि, गृहीतब्रह्मचर्या ,देवं त्रैलोक्यनाथमनाथशरणमिम शरणार्थिनीस्थाणुमाश्रिता ।

(घ) वितरतिगुरुः प्राज्ञेविद्यां यथैवतथाजडे

न तु खलुतयोर्ज्ञाने शक्तिकरोत्यपहन्ति वा ।

भवतिहिपुनर्भूयान् भेदः फलंप्रतितद्यथा

प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहेमणिर्नमृदादयः ।।

(ड.) एकोरसः करुण एव निमित्तभेदा–

भिन्नः पृथकपृथगिवाश्रयतेविवर्तान्।

आवर्तबुदबुदतरंगमयान्विकारा–

नम्भोयथासलिलमेवहितत्समस्तम् ।।

प्रश्नसं 2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5 × 10 = 50

(क) नैधषीयचरितम् के प्रथम सर्ग का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) नैधषीयचरितम् के प्रथमसर्ग के आधार पर वन शोभा का वर्णन कीजिए।

(ग) महाकवि बाणभट्ट की काव्यशैली का वर्णन कीजिए।

(घ) त्रिविक्रमभट्ट के व्यक्तित्व व रचनाओं पर लेख लिखिए ।

(ड.) भवभूति की काव्यशैली का वर्णन कीजिए ।

(च) गद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास पर लेख लिखिए।